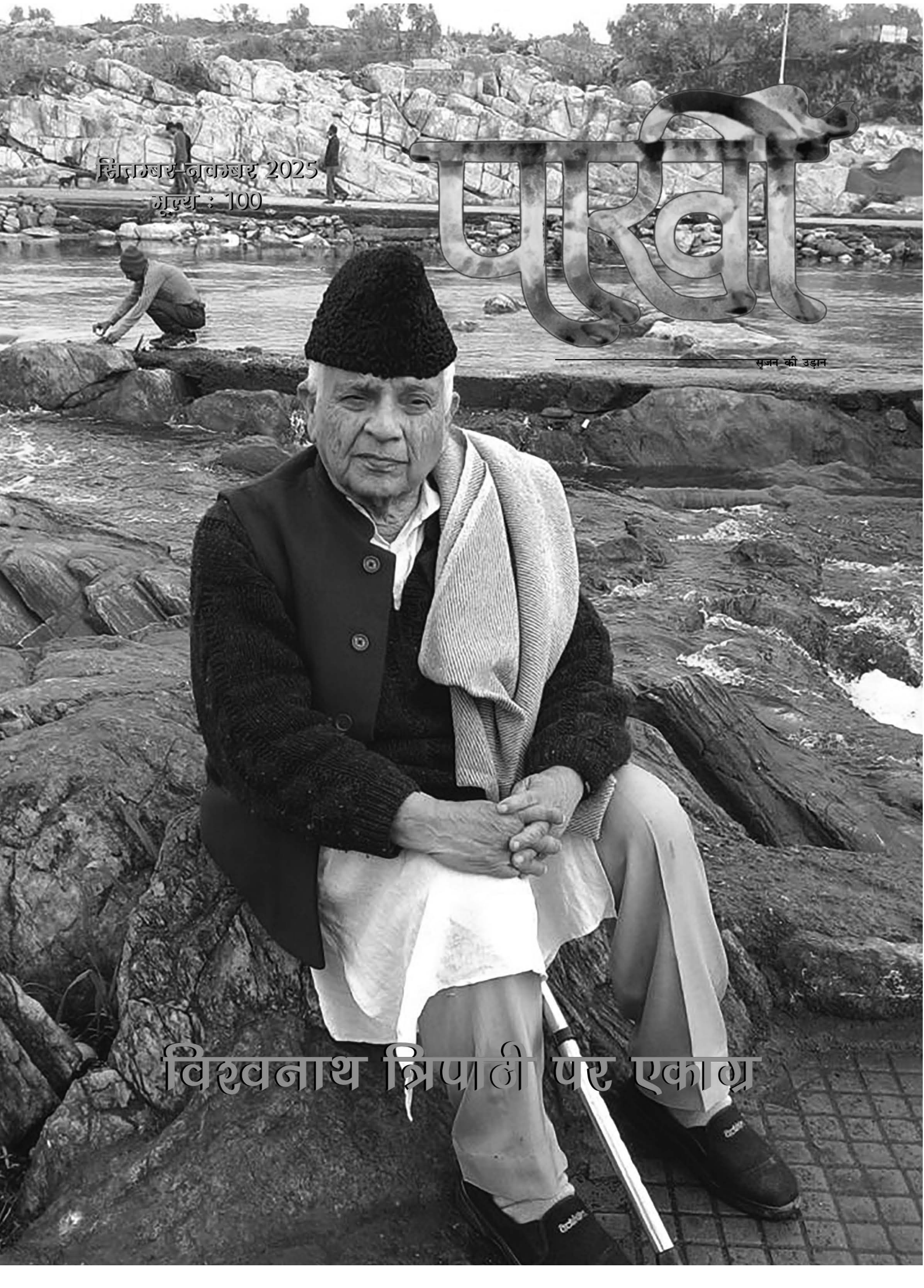

पाखी

सृजन की उड़ान

सितम्बर-नवम्बर 2025
मूल्य : 100

विश्वनाथ त्रिपाठी पर एकाग्र

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह

वर्ष : 18, अंक 12-2, सितंबर-नवंबर, 2025

मूल्य :

प्रति	:	रु. 100.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय।
स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

लोक और साहित्य के जीवंत सेतु 4

लोकवादी तुलसी के बहाने

विश्वनाथ त्रिपाठी का तुलसी-चिंतन	:	ए. अरविंदाक्षन	6
भक्ति-आलोचना की विश्वनाथ-दृष्टि	:	शशिभूषण मिश्र	9
सगुण भक्ति का लोकवादी पाठ	:	अरुंधति	14

स्मृति आख्यान के बहाने

स्मृति, चरित्र और समाज	:	महेश दर्पण	19
'व्योमकेश दरवेश' और हिंदी का बौद्धिक समाज	:	बसंत त्रिपाठी	25
विश्वनाथ त्रिपाठी के संस्मरणों में लोकचेतना	:	रसाल सिंह एवं पीयूष कुमार	31
व्योमकेश दरवेश न पढ़ा तो क्या खाक पढ़ा है?	:	निशांत	36
समाज और समय को समझने का मार्ग	:	चारुमित्रा	43
अनुभव के टकसाल से निर्मित	:	हनी दर्शन	47

आलोचना और इतिहास के बहाने

हिंदी आलोचना के लोकवादी शिल्पकार	:	भरत प्रसाद	53
विश्वनाथ त्रिपाठी की समीक्षा दृष्टि और हिंदी आलोचना	:	प्रेम शशांक	58
सामाजिक दायित्व निर्वहन का आलोचक	:	अंकित नरवाल	65
इतिहास संग साहित्य की संवेदना	:	डॉ. सुनीता	69
हिंदी साहित्य का इतिहास बोझिल नहीं	:	तानिया लाम्बा	74

परसाई के बहाने

अंधेरे से उजाले की ओर	:	हरियश राय	76
त्रिपाठी जी के नजरिए से हरिशंकर परसाई	:	अनामिका प्रिया	81
परसाई से मिलने का मौका	:	भारती	85

कथा आलोचना के बहाने

विश्वनाथ त्रिपाठी : कथा आलोचना की सिद्धियां	:	पंकज शर्मा	89
कथा साहित्य के पारखी आलोचक	:	शिव कुमार यादव	93

बिखरी हुई यादों के बहाने

शतायु हों त्रिपाठी जी	:	अजय तिवारी	97
ज्यों-ज्यों बूड़े विश्वनाथ त्रिपाठीय रंग	:	प्रेम जनमेजय	101
यमुना-तट पर गंगा-स्नान	:	हरजेंद्र चौधरी	108
गो आंख को जुंबिश नहीं हाथों में तो दम है	:	प्रियदर्शन	113
हिंदी के श्रेष्ठ गद्यकार एवं आलोचक भी बलरामपुरिया	:	चंद्रेश्वर	115
ऐसा गुरु कोई अन्य नहीं	:	वेद प्रकाश	118
सुरुचि, सुवास, सरस, अनुरागा	:	प्रज्ञा	123
बिसनाथ को सहेजे चलते विश्वनाथ त्रिपाठी	:	हरीशचंद्र पांडे	128

अंतः कथा

जीवन के हर रंग-ढंग में मगनामगन बिसनाथ	:	अर्पण कुमार	131
बिसनाथ को यहां से देखो	:	शोभा अक्षर	135
अभी मेरी लाभ पहुंचाने की शक्ति क्षीण नहीं हुई है*	:	प्रदीप रंगकर्मी	137

साक्षात्कार

सुखी रहना सबसे बड़ी नैतिकता है	:	पाखी संग 'टॉक-ऑन टेबल'	143
चलति एकेन पादेन...	:	अशोक गुजराती	149
जैसे जीवन है वैसे ही रचना को होना चाहिए	:	राकेश तिवारी	154

लोक और साहित्य के जीवंत सेतु

विश्वनाथ त्रिपाठी जी संग पहली मुलाकात का प्रसंग मेरी स्मृति में हमेशा जीवंत रहेगा। वह मुलाकात 'पाखी' के लिए आयोजित एक साक्षात्कार के दौरान मई 2018 में हुई थी। उस दिन त्रिपाठी जी हमारे कार्यालय आए और हमने उनके साथ एक लंबी वार्ता रखी। उस अवसर पर ख्यात कवि मदन कश्यप, 'पाखी' के तत्कालीन कार्यकारी संपादक प्रेम भारद्वाज और कई अन्य साहित्यकार भी उपस्थित थे। यह साक्षात्कार मूल रूप से एक साहित्यिक बातचीत था, पर कुछ अंशों ने अप्रत्याशित रूप से विवाद खड़ा कर दिया। संपादक होने के नाते मुझे उन अंशों को रोक लेना चाहिए था, त्रिपाठी जी की वरिष्ठता और उनके सहज-सरल व्यक्तित्व को देखते हुए यह उचित कदम होता। लेकिन मेरी नीति रही है कि मैं अपने सहयोगियों के निर्णय में हस्तक्षेप नहीं करता। उस समय प्रेम भारद्वाज कार्यकारी संपादक थे और मैंने उनके निर्णय का सम्मान किया। बाद में विवाद खड़ा हुआ, मुझे खेद भी हुआ। पर हमारी साहित्यिक दुनिया में विवाद होना असामान्य नहीं है। यहां संगठित गिरोह काम करते हैं जिन्हें मैं अक्सर 'विवाद वीर' कहता हूं। इन विवाद वीरों का काम हर किसी की नीयत पर शक करना, छोटी-छोटी बातों को बढ़ाना और रायता फैलाना होता है।

पाखी में प्रकाशित वह साक्षात्कार भी ऐसे ही विवाद वीरों की चाल में आ गया। लेकिन इन सबसे अलग, मेरे मन में जो सबसे गहरी छाप रह गई, वह थी त्रिपाठी जी का बड़प्पन। मैंने उनसे क्षमा मांगी और उन्होंने अत्यंत सहजता, आत्मीयता और बड़ेपन के साथ मेरी बात स्वीकार कर ली। यही उनका व्यक्तित्व है—विवादों, असहमतियों और आलोचनाओं के बीच भी सरलता और गरिमा को बनाए रखना। इस अंक की बाबत मेरी प्रिय मित्र शोभा अक्षर ने मुझे सलाह दी कि मुझे विश्वनाथ जी से बात करनी चाहिए तो मैंने अपना आलस त्याग उन्हें 3 अक्टूबर की सुबह फोन किया। वे बेहद प्रसन्न हुए। मेरे बताने पर कि मैं इस समय उत्तराखंड के पहाड़ों में विचर रहा हूं त्रिपाठी जी स्मृतियों के गहरे सागर में खो गए। चहकते हुए उन्होंने बताया कि उनकी पहली नौकरी डीएसबी कॉलेज नैनीताल में लगी थी और 15 नवंबर, 1958 उनका पहला दिन इस कॉलेज में था। त्रिपाठी जी की धर्मपत्नी वहीं अध्ययन कर रही थीं और वे उसी कॉलेज में पढ़ाते थे। 11 माह नैनीताल रहे। मुझे आश्चर्य है 95 बरस की उम्र में भी उनकी याददाश्त दुरुस्त है और वे अपने उन दिनों को सबसे सुंदर दिन बताते हुए भाव विह्वल हो गए।

इस व्यक्तिगत अनुभव के बाद जब मैं त्रिपाठी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दृष्टि डालता हूं तो यह और स्पष्ट हो जाता है कि वे सिर्फ आलोचक नहीं हैं बल्कि हिंदी साहित्य में लोक, समाज और संस्कृति के बीच एक जीवंत सेतु हैं। उनका लेखन, उनका अध्यापन और उनका व्यक्तित्व हमें यह सिखाता है कि साहित्य का उद्देश्य केवल शब्दों का खेल नहीं बल्कि जीवन और समाज के साथ संवेदनशील संवाद है। 16 फरवरी 1931 को बस्ती जिले में जन्मे त्रिपाठी जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता। इस परिवेश ने उन्हें सहज मानवीय संवेदना और लोकजीवन की गहरी समझ दी। शिक्षा उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की और फिर दिल्ली विश्वविद्यालय में लंबे समय तक अध्यापन किया। अध्यापन उनके जीवन का महत्वपूर्ण अध्याय है। वे केवल किताबें पढ़ाने वाले शिक्षक नहीं बल्कि विद्यार्थियों को जीवन और समाज से जोड़ने वाले मार्गदर्शक हैं। उनके शिष्यों की लंबी परंपरा आज भी साहित्य, अध्यापन और शोध की दुनिया में सक्रिय है।

त्रिपाठी जी की आलोचना का सबसे बड़ा गुण उसका संतुलन और मानवीय दृष्टि है। वे किसी भी रचना को केवल ऊंचे या नीचे दर्जे पर रखने का काम नहीं करते बल्कि रचना के भीतर की संवेदनाओं को पकड़ने का प्रयास करते हैं। उनकी आलोचना में कटुता नहीं है, संवाद का भाव है। वे मानते हैं कि आलोचना का उद्देश्य लेखक को छोटा या बड़ा साबित करना नहीं, रचना की आत्मा को सामने लाना है। यही कारण है कि उनकी आलोचना का स्वर संवेदनशील और संतुलित रहता है।

'हिंदी साहित्य का सरल इतिहास' पुस्तक विद्यार्थियों और सामान्य पाठकों के लिए हिंदी साहित्य की जटिल परंपरा को सरल भाषा में प्रस्तुत करती है। इसमें साहित्य के विभिन्न युगों, धाराओं और प्रमुख रचनाकारों को सहज ढंग से समझाया गया है। इस पुस्तक को पढ़कर यह स्पष्ट होता है कि त्रिपाठी जी केवल गंभीर इतिहासकार ही नहीं, बल्कि ऐसे शिक्षक भी हैं जो कठिन बात को सरल ढंग से समझाने की कला जानते हैं।

'लोकवादी तुलसीदास' उनकी एक महत्वपूर्ण कृति है जिसमें उन्होंने तुलसीदास के काव्य और उनके व्यक्तित्व को लोकवादी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। तुलसीदास को सामान्यतः धार्मिक कवि माना जाता है, पर त्रिपाठी जी दिखाते